मुक्तक

श्याम ''अंकुर''

पानी से स्नान किया सब करते हैं
'अंकुर' जल का पान किया सब करते हैं
कपड़े भी तो सब इसी से ही धुलते
पानी को यूँ इस्तेमाल किया सब करते हैं

पानी से ही बोल निकलता बात सही
इससे ही हर कोल निकलता बात सही
इससे ही तो मीत हमारे जीवन का
हर पल अनमोल निकलता बात सही

पानी का उपकार अगर तू माने तो
सदियों से है यार अगर तू माने तो
इससे आठों याम सभी के जीवन में
जीवन का संचार अगर तू माने तो

पानी है अनमोल समझ में आये तो
हर प्राणी के बोल समझ में आये तो
जीवन का पर्याय यही तो पानी है
इसमें जीवन घोल समझ में आये तो

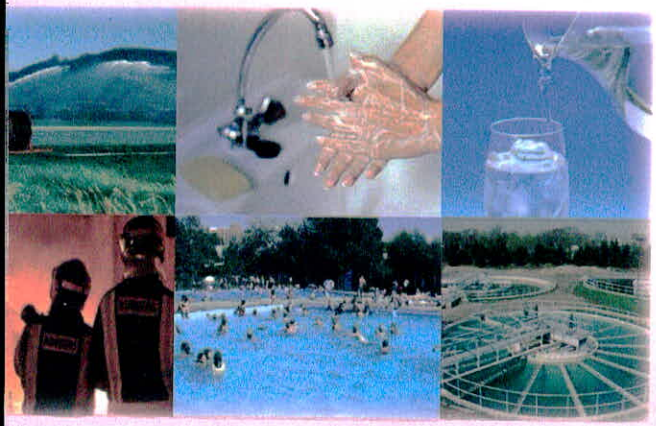

इस पानी की बात खुदा भी करते हैं
तब ही तो बरसात खुदा भी करते हैं
अंजान मगर इन्सान बहाता पानी को
शबनम को सौगात खुदा भी करते हैं

सच यह अंकुर मान अभी भी जिन्दा है
जल का मतलब जान अभी भी जिन्दा है
कहते आये लोग अभी भी कहते यह ही
जल से यार जहान अभी भी जिन्दा है।

जीवों पर उपकार रहा है जल ही तो
श्वांसों का संचार रहा है जल ही तो
समझो इसका मोल नहीं तो खतरा है

जीवन का आधार रहा है जल ही तो

नदी, कूप और ताल हमारे सूख रहे
बिन जल व्याकुल जीव बिचारे मूक रहे
बिन पानी के पेड़ लगे हैं मुर्झाए से
जीने से कुछ जीव बिना जल चूक रहे

जंगल की सौगात कहाँ अब होती है
जीवों की अंगणित जात कहाँ अब होती है
कटे यार हैं पेड़ बचे ना जंगल भी
वैसी यूँ बरसात कहाँ अब होती है

काट दिये है पेड़ बचायें जंगल को
आओ फिर से आज लगायें जंगल को
जंगल से ही जीव जनावर पौधे भी
अंकुर अपना मीत बनायें जंगल को

हर पल हाय-तौबा मची है 'अंकुर' रे
घर चल हाय-तौबा मची है अंकुर रे
कुदरत से यूँ बैर बढ़ाता मानव अब
बिन जल हाय-तौबा मची है अंकुर रे

जल जीवन आधार पुकारा करते हैं
की जो गलती यार दुबारा करते हैं
जल बिन जीवन शेष रहेगा कैसे यह
करके यह स्वीकार विचारा करते हैं

संपर्क करें:
श्याम ''अंकुर''
हठीला भैरूजी की टेक,
मण्डोला वाई, बारां-325 205
मो.नं. 09461295238